

श्रीवीरकमचप्रभाट

श्रीगणेशायनमः॥ पात्रेचाधरी राहीली॥ दुळा
कांडा प्रंली करी॥ कोरडीचेईजाडीसीरी॥ वेगळा
करीश्रयपाका॥ १॥ अ॥ पुढेअ॥ निउदकवेगळे॥
नूलीपेकोहाच॥ वीराक॥ रक्तेमीळेतेभक्षुनीरा
हे॥ २॥ हेसकर्मलेऊ॥ तमा॥ नववाजातसेये
केयंकदीयसा॥ चीलापुढी॥ आसेपात्रेसातेजा
पुर्वीपरीयेसा॥ ३॥ बोलाउन्नीरुणीसी॥ मंगली
जालीपरीतयेपासी॥ मजेंगारा॥ रंजंसेअंम
चंग्रहवासी॥ तेकार्यसांगेनलुजा॥ ४॥ दोदीय

रसो रसो प्रसुती हारिनि । जरो पुत्र उजेल । नीर
नीसी धको । आणी के दा ररिवा लावा । धादि
शाल कन्या येथे जाणी । तुज दर्नि सुवर्ण नाणी ।
७१ ॥ रीतुकी ऐक नीवीन वर्णी । येरी सणे बहुत बरवो ।
॥ ६॥ काही द्रव्य करी दीधले । सणे नगरी वीचारी
१॥ वेंही लो । तीच्या दीवसा ये प्रमाण । सो गिल ले । १॥
येरी वीचारी नगरी । लये नगरीचा भुपती ।
तया नरीना ही पुत्र संतती । कन्या स्यात जणी
जासली । न्ह श्री आस गरोद । राजास
पंराणी येसी । पुत्र नही । तामने सी । ज
आला कन्या प्रसवसी । तारी लुप्त त्याग करीन
॥ ९॥ राणी जाली भयाणी । सणे नेक के पुर्व
संजीत । तारी पुर्वी ये वादा पदार्थी । वीचारा
वा लागेले । १०॥ वो ला रुनी सुरिणीसी । मंत्र
सांगे तीच्या कानीसी । मज कन्या हो रिलेने
७२ ॥ उनी । आणी कार ररिवा लावी । ११॥ तथील
पुत्र आणी येथे । तुज द्रव्य दर्नि बहुत । हे आ
सो द्यावे उपा । प्रगटन कारावे को हा सी ।
॥ १२॥ करी दीधली पत्न नाणी । ग श्री शिव स

सांगेराणी॥ थोरला नंदली सुरिणी॥ सपने होही
 कउनी साधले इव्य॥ १३॥ प्रलीहीनी दीना लरी॥
 ७) दोही घरी येर सारा करी॥ पुणनि वना सते आवथ
 री॥ दोघी जणीसी भरलोग १४॥ येक दीवरी रा
 त्री वेळे॥ राणीचे पोट दुरचु लागले॥ सुरिणी तेथे॥ २॥
 २॥ बोलावीले॥ सावध आसवे लुवा॥ १५॥ रात्री
 तीन प्रहर कमळी॥ तवराणी प्रसूत जाली॥
 कन्या उत्तम जली॥ सर्व गुण संपुर्ण॥ १६॥ प्रभा
 त सप्तये वेळी॥ वारिको स प्रसूत जाला॥ सुरिणी
 ने कैद्या उकता॥ नेउनी द्याले राणी पळे॥ १७॥

॥ वीर मचा॥ द्याटो
 कन्या घेउनी येथे जाली॥ तये वारिको पुढे द्याली॥
 ते सावध होउनी पुसले गाणी॥ काय जाले मण
 वेनी॥ १८॥ सुरिणी सप पाहे कन्येसी॥ येसी वीचारी
 मानसी॥ प्रसूत बोली लाधे नुजोरी॥ तो काय ल
 टी का जाला॥ १९॥ ज्योतीसी लटके न के सत्य
 मज पुत्र जाला यथार्थी॥ रणे मज आसल १३ मील
 केले वीकला॥ २०॥ शोले सपली र स कायनी मी
 त्य १३ चाली॥ प्रथम जगना न जग वस्था आसली॥
 जगमी कनाही रावरीली॥ मजोनी जाली वीहक॥

॥२१॥ हृणयेयवडाधेतल्लावनवालयपुत्राचीधरीली
 होलीजास॥ सवदेवेकेलीनीगासा॥ मध्येवीधुउ
 हलो॥२२॥ ऐसीसंतीकरीमना॥ हृणेमोसुरवीजा
 ३॥ स्याजासीतेस्थानी॥ माजेमजलागुनीयेरति॥
 समयानसार॥२३॥ हृणगुनीकन्याधेतली॥
 पुढारी॥ सुरवेनीद्राकरी॥ बाराहीवसकमीती
 यावरी॥ तेरावेदीवसीपाजाप्रवतला॥२४॥
 नावटेवीलेसुमनी॥ हातधमाबीजापुलेमनी॥
 लवकायकीलराजासुवनी॥ तेजापुपरेका॥२५॥

जाणारी॥२६॥
 राणीसपुत्रजाला॥ इतरव्यरायेलेकीला॥ दानध
 मीकेला॥ दीजवरासी॥२७॥ भोमंतुहारनी
 ५४॥ भरीस॥ कागलावाजंतराचागजरा॥ मंडपउ
 ११॥ वीलापरीकरा॥ नृत्याबबान॥ नाचलितारिरी
 ॥२८॥ आकरावादीवसकमोलिमावरी॥ बारा
 वादीवसबारसेकरी॥ तेरावेदीवसीनामधारी॥
 बजीशेनऐसे॥२९॥ देहदीवसेवाठलाप्रआ
 टायराचाजाला॥ रायेरतबेधकेला॥

पंडीती वेद आभ्यास सीकवीला ॥ मग धनुर्वी
दया आभ्यासीली ॥ २९ ॥ ते होजाती संपुर्णता ॥
राजा होय मनीवी चारीला ॥ द्वादश कराकेसर
लीसुला ॥ राज्य आतायसी देतु ॥ ३० ॥ आ
ता वध पण जालासी ॥ आचरायेत पत्रीया
सी ॥ राज्य हे तुनी पुत्रासी ॥ आपण जसे आनु
दणना ॥ ३१ ॥ आ वधे संगे प्रधाना ॥ हजे आ
इना न पण आसे वकीरोना ॥ तुज आसीरा
हण ॥ वीर के भाले नाचत ॥ ज्येभीरा ॥ ३२ ॥
ईतु के संगे नीरावोरोना ॥ वकीरोन राज्यचा
तुलागला ॥ पुढे काय करीला ॥ तें आपु
चपरीयेसा ॥ प्रसीदीना ॥ त्रये वोळगेसी ॥
गायन आधवा करी नृत्यासी ॥ राजा देतो वा
कचरचासी ॥ आसी आदरे करोनी ॥ ३४ ॥ हे
सी कोणे येकेदीनी ॥ वोळगेसी आती नत्यणी ॥
सवेले वारी को द्योनी ॥ करी गायन पे ॥ ३५ ॥
पुढे बेंसली ले पातर नारीका ॥ रिची सुने रक्षी
पादुका ॥ राये लक्ष्मी ले कमळ फाळीका ॥

मग पुसे पलरे सी ॥ ३६ ॥ हजे ले कोण कोण
 ची ॥ आली लावण्य शरप लयेची ॥ नुन्य तावे रे
 ६ रफे सी ॥ रचे शरप देखोनीया ॥ ३७ ॥ पात्र सुणे
 २ लो आहे आमुची ॥ जरी वारन धरीसी लयेची ॥
 तरी आरिली करा भोगाची ॥ रात्री समर येरिजे ॥
 ॥ ३८ ॥ राजा हजे वर वेप पातर थोर संतोषली
 जीवे ॥ दराये जनी धपावे तीथे सी पुसली जा
 ती ॥ ३९ ॥ हजे उरी करी आभोगा ॥ परी भव
 चची सि विभोगा ॥ करी सच संभोगा ॥ राया सी

॥ श्री कमळा ॥ प्रग ८ ॥
 येरी हजे भोगे वीण नाहे नाडा ॥ मासे मज आह
 लेची गोडा ॥ ४० ॥ जरी केळुवंड तरी आंगी कार
 ने करी सी ॥ ४१ ॥ पात्र नमानी लाखे गुलर ॥ बोध
 री धुप वीली मनोहार ॥ हजे रिस कर बळकार ॥
 ने उमी दालुराय पुढा ॥ ४२ ॥ से दठ करानी या
 मन ॥ पात्र प्रती नळे वचन ॥ हजे जे जे करी सी
 ले प्रमाण ॥ मग उगी चरहीली ॥ ४३ ॥ येरी मनी
 करी वी चार ॥ हजे रिस वाया का कर कर करा ॥

७० ॥ ओयेरि लह पवरा ॥ लोमा श्या पुत्रा समान ॥ ४४ ॥
 आरु लाला दीन करासी ॥ पलंग घालुनी क
 नी सी से जेसी ॥ आरु लफो डुनी रुमने ची ॥ टे ध
 वी ती परी मळ द्या ॥ ४५ ॥ पात्र मुने जयनी द्र।
 करी ॥ येरी नो भय आभ्या लरी ॥ जसुनी से
 जेवरी ॥ पड्डे कुमारी सही त ॥ ४६ ॥ रिकडे स
 ये सारी ली आरु गणा ॥ सौंगा ले घेतले से वक
 जना ॥ धरनी काम वासना ॥ जाल से रत्तर ॥ ४७ ॥
 मागी चाले जव धड धड ला ॥ लवपी गज बोलीत

७१ ॥ वी काम चा प्रगट ॥
 वी परोला दुलप लवी ला घावत ॥ जे ती शापा
 सो ॥ ४८ ॥ री हे करनी वेलरी ॥ जे जे राय जी
 जाव धारा ॥ लुली जाल जया वी चारा ॥ लेका
 यनि घडे सर्व धा ॥ ४९ ॥ हे से बो ललो जी परी क्षी
 श्वरा ॥ जे माहा दोरी पडल नृपवरा ॥ आणी नघ
 डे जालु सर ॥ प्रस्थ लरी हे सादी सलो ॥ ५० ॥
 राये वी चारी ले मानसी ॥ मुरडे नी गेल धरा
 सी ॥ नी द्राकनी सुमंचकी ॥ ५१ ॥ रिकडे मागी रक्षी
 कळ बोलीणी ॥ लव उगवला दोरी नरा लोने

राये के ली की नो हवाणी ॥ असल मजरी बोली
 ला ॥ ८५ ॥ मुरव प्रक्षुणी को ली बोली गो ॥ वृथा गेल
 नाना परी मकरंग ॥ आणी बहुत वे कपा ही ला मागी
 ८६ ॥ परी येणे धडले ना ही ॥ ८७ ॥ राजा हर्ष का ही हो लेरा
 जकारण ॥ हर्षो नो येणे धडले ना हो जाण ॥ आ
 ८८ ॥ जी ये रीन सत्य वचन ॥ ओं क वो सुंदरी ॥ ८९ ॥ ९० ॥
 पुनरपी वकी रो न काय करी ॥ रो व क धेवो नी
 वेरा वरी म सुख र वली सारी ॥ नी ग लाल लाल
 पै ॥ ९१ ॥ राजा लाल से म हना ॥ मुर ॥ ल व ची ची
 टी बोल पा ली ॥ उतरा ॥ ल व म सी ॥ ये स वरा ॥
 बोल ली वी ॥ सणा ॥ सी ॥ ९२ ॥ सेणे बोल ली ले दी
 ज वरा ॥ राजा ॥ ल वी ॥ ये ॥ पु ॥ उतरा ॥ ऐ का
 ८९ ॥ हर्षो जी राजेश्वरा ॥ काल चची स कुण सांगत से ॥
 ९३ ॥ मा गली फीरो नी गो ला घरा सी ॥ उदयो जा
 ला ही न कर सी ॥ पत्रा ये उनी रा या पा सी ॥ क
 था बोल लो ज हा ली ॥ ९४ ॥ हर्षो जी जन बोल
 जा सत्य ॥ परी राजा नी वडी सत्य मी त्या ॥ राजा
 जरी बोली ला वी परी ता ॥ ली कोणे करा वानी वा
 उ ॥ ९५ ॥ रा वो सेणे पात्रे सी ॥ लान धरा व सी रा

यासी। अजीयेरनि नो धरि सी। हे वचन प्रमा
 ण मासी। ६०॥ पात्रागे की नो ज भुवना। राये के की
 १ सभावी सजना। मग सारो नी आरोग्य। नये
 ८॥ कनीद्र। करी। ६१॥ सव मा वध दू। हिरा पती।
 उदयो पावली का करानी। राये करनी सक व ८॥
 आरिती। प्रयाण करी लाजा हाता। ६२॥ जात
 आसे का मा वर सुने। मनी गोर जी बैसली हो
 ती गोधने। देख्य पुछी पाय प डी लात्रणे। ले
 बोभाये आ पुले माले सी। ६३॥ तेल नरे वा कर।
 जाका मा वर। नार स म। मग म म कर।

१ तु जन देर व आवी नारा। वी कम च प्र प्र। ६४॥
 से। ६४॥ ग। र। च। र। व। ॥ ज। ली। अ। र। की। ल। ॥ ले। न
 मनी फार र चो चला। हो न दी व स प्रस्य ऐ की ल।
 ६५॥ ज। ली। प्र। त्य। दू। कपी। ऐ। की। ले। ॥ ६५॥ राये दू दू वा
 सन। सां। डी। ली। ॥ मने प्रत्य दू ली मासी मा। डी। ॥ ऐ
 ६६॥ सकपे। नी। लये। वेकी। ॥ मा। लू। हर। रा। ण। धे। उ। आ। ला। ॥
 ॥ ६६॥ इ। के। डे। पा। त्रे। ने। के। टा। की। ॥ स। र। ॥ व। र। की। सी। क
 री व र च आ कं कर। ॥ सर्व आ क कारी स ज कर।
 नी मने हार। ॥ पु। ह। उ। च। ली। जा। ली। ॥ ६७॥

येरी नी भयिमान सीधे वो सगा धे उनी कुमारी सी ॥
नोह करी जा गृती सी ॥ समय अप ॥ जगी नी चेकोनी ॥
॥ ६८ ॥ राये सं जो नी व सना कुडी ॥ मंदीर प्रवेश ॥
॥ ६९ ॥ लगे मा ले क वा उ उघ डी ॥ सांगे छापु ल
ग भि भा वा ॥ ७० ॥ क वा उ उघ डी ॥ सै स लरी ॥ लगे बा पा
ये र गि भी लरी ॥ बै सो नी स व लरी ॥ ऐ क मा सी ये
क था ॥ ७१ ॥ ली ने स मु क आ व धे स गी ल को ॥ ये
रे ७२ ॥ ली आ दे व री स लो ॥ ल व ज पु वी क व र लो ॥
ले प री ये सी रा या ॥ ७३ ॥ मो हो हा र ली ले सुं ह रा ॥ फू
ला पा न्हा नी वा ॥ सा डि थ धा रा ॥ ह्या र्व व ली मे री

वी क्र म च रा प्र रा ॥
कु म रा ॥ ये क करी प्रा रा ना ॥ ७४ ॥ ये री न वो स गां
धे उन ॥ मुर पी सु न के र ल ल न ॥ करो ल दु ग्ध पा
ना ॥ आ न दे क रा नी ॥ ७५ ॥ उ टो नी बै स ल पं ल ग ॥
व री म मा ता व ही ण जा नी ली स री ॥ बो र ग उ नी ज ॥
गी ली नृ त्य करी ॥ म्पे न ज न्म को टे जा हा ला ॥ ७६ ॥
लु ज न्म ला सी श्री म ता कु की ॥ प्र स व ली ले रा ज
प ही वे लु की ॥ रा जा क्षे स ल्प सां ग व ही ली ॥
न को बी लो मा वी क ॥ ७७ ॥ रा य स ल्प ज री पु स
पु स री ॥ म ज ट उ के ना ही नी ध री री ॥ पु स री

सुरिणीसीग ते प्रसुलीकाजी होती ॥ ७५ ॥ मंगवो
लावी सुरिणी ॥ राजापुरे लयेला ॥ नीग प्रज जन्म कोणे
स्थानी ॥ हेय थार्थ सिंग ॥ वे ॥ ७७ ॥ जरी ररा गं सीम ॥ ७८ ॥
१० रिक वचन ॥ तरी छे दीन नारी क आणी कणी ॥ ऐसे ह
ठवी आ सन ॥ सत्य व देवाणी ॥ ७८ ॥ ते जाली भया
॥ तथोर ॥ राया माथा टेवी आ भय कर ॥ तरी मजि
सा ला स माचारा ॥ लुज ची दीप करीन ॥ ७९ ॥ राये
॥ ज टेवी ला माथा कर ॥ सगली जाली मुकार भं वी चार ॥
रजि पा सुनी जी लुज ह्म मनी धरि ॥ माक पट केले
॥ उद नारत्तव ॥ ८० ॥ मंग काय करो बली शेन ॥ माय
बहीणी सुरवार सवी बे सु न ॥ गेलारा जगृहासी
देनुना ॥ रोड वा उप चार पुली ला ला ला ॥ ८१ ॥ त
व उदयो जाला ग मरति पव ॥ लावी ले प्रधान मंत्री ॥
॥ ८२ ॥ सगला जाला लया प्रती ॥ राजनीली लुही चालवी जे ॥
॥ ८३ ॥ मज कार्य असे मा सयेक ॥ लुही राहावे वळ पु
र्वक ॥ मार सा जाली ला ॥ कणीक ॥ ये रनि जाला ॥ ८४ ॥
हे से सगोनी प्रधानारी ॥ देला जाला द्रव्य भंड
रासी ॥ रथ वार कुंज रासी ॥ गुठार घालवी लो ॥
॥ ८५ ॥ पाय भार नाही नीली ॥ चालता दगणी
क्षीली ॥ पुढे चाले हळ ॥ धीप ली पा दो सी राज

भाग ॥ ८५ ॥ माला आणी भगीणी पातल रवी
 मधे बैसु नो गत्यी मधे धो लोभी शोणी ॥ चाल
 सीम जभार ॥ ८६ ॥ हे सपावले सरोवरी ॥ जेथे सु ॥
 रशो नने लाजक चरी ॥ रोना उतरली तरी ॥ मध
 दिधलाराज मंडप ॥ ८७ ॥ आनु क्रमे उतरली रोना ॥
 यस्त्रे गरहाना ही गणना ॥ हारील पील कसठा वणी ॥
 येक जावचे शुभच वणी ॥ ८८ ॥ कीली ये वणरे तरु ॥
 कुरु ववण तरु वल रवीला ॥ बहु लचीन वीचीन ॥ रो
 भाय मान दीसली ॥ ८९ ॥ राज मंडपची कायकुस
 वि ॥ नीळ पीवले फडके आसी ॥ लाडा लापता चैकरी ॥

चैक मधे मखमल ॥ ९० ॥ तो कमचा ॥ प्रसदा ॥
 णी ॥ होरे गोमोद ॥ जडले ॥ कोरणी पाचो परोजा
 ची रवीळणी ॥ टाईट ॥ रिकली आसे ॥ ९१ ॥ मोली
 या ॥ ये द्योरा सोडीले ॥ मध्य द्युरस भरोवी ले ॥ के
 से मीर वले ॥ हे मघणरे ले जडीले ॥ वधने आ
 वधी रे रामाची ॥ ९२ ॥ ब्राह्मण मीळाले आसुं
 रव्याल ॥ त्ये जजैसे उगवला जाले ॥ लयासी
 राजा ॥ मरकारीता ॥ जाली ॥ हरे करानी मर ॥
 न मीला वी द्युहा ॥ जपा बेराची लादो जवता ॥

तयासीरसंगेनपवर॥ प्रथककार करजपा॥ ९०॥
 कीलीयेकासीनवगृहादीधले॥ येकीजाकर॥
 १२ रुद्रआरंभीले॥ येकलुळजारस्थापीलेजाते॥ १३
 सप्तसतीकरोनीया॥ ९५॥ येकजपतीरेणुका
 (७) सहस्रनमा॥ येकीकेलेक्षेत्रंपाजाचेध्यान॥
 येककरीलीमेराळपुजन॥ ऐसेवैसलेस्थळस्थ
 ठी॥ ९६॥ येकीआराधीलेजळचरासी॥ रा
 येबाधलायस्नानकं कजासी॥ मनीष्यायेर
 सीकोसी॥ करीदुहायेवैराणा॥ ९७॥ ११॥

वीक्रमचा॥ प्रगटा॥
 ऐसीकोरीदोनीनवरात्रा॥ मगआदारीलेहावनाले॥
 होमद्रव्याणीकरामस्ता॥ जेजेवालीलीहोती॥ ९८॥
 लेखालुपाआजे॥ आदुगधांचारासोपुढी॥
 (१३०) एाकरानीरवडरवडीगटेवीलेजातेकावी॥ ९९॥
 कुंडरचोलेआदुकोनी॥ स्थापीलेजातेहुतदान॥
 मंत्रंधोराकरीलीब्राह्मणा॥ लेणेआग्नीप्रजळला॥
 १००॥ ज्वाळालगलीआकासी॥ आवदानराकी
 तीरसी॥ ब्रामीधांचाहोतीरसी॥ त्यासमपीले
 जाते॥ १०१॥ सरल्यहोमद्रव्यांचारासी॥

१५
१३॥ द्रुतपयसमपीली आभीसी॥ गणौ लनाही फळा
वळीसी॥ तेही समपीले जाळे॥ १०२॥ जाकी पुणवि
धी वळीदान॥ परी देव लानके प्रसन्ना॥ वळी रोन
१३॥ करी स्तुती रत्नवन॥ परी नंद रेवली प्रसनता॥ १०३॥
॥ १०३॥ थोर जाला दक्षिण॥ ह्मणे देव ले मांडी ला
नी वणि॥ करकनकी सुरी धेनुनी॥ काढी मास
आपुले॥ १०४॥ तेरा की आग्री भीलरी॥ मुरवे
कस्य॥ पणिकरी॥ तेरो जालुन धं वसी॥ दोहं जी
रो मास घालले॥ १०५॥ जकी देवता आनवा दती॥
ह्मणे याने मांडी ले नी वणि॥ भक्ती या काय मळत
से आसा प्रली॥ तेची चाराप॥ १०६॥ सुरी ज
वंचा लकी मार केतुली॥ तने आट्ट ह्मले बोल
ली सकळी॥ माग माग गा भुपाळा जाले प्रसन्ना॥
॥ १०७॥ येर ह्मणे माले जाले ती प्रसन्ना॥ तरी पीला
दया वारपुर रोन॥ तेही आणी लाजका तुन॥ बाही
र आला ये कायकी॥ १०८॥ धावो नी वळी रोन आ
ळंगी ला॥ उचलो नी कूद री येला॥ धेउनी
आला मंडपा मंडो॥ १०९॥ करवीले कनक स्या॥

ना॥ ब्राह्मणारपी देव वी लेदान॥ मात वोला उनी॥
घाली दडवत॥ ११०॥ श्री पुरा वैभरली॥ पीतापु
(१५) त्रये कंवरली॥ दान करी ली जाती॥ आली
मौन देकरानी॥ १११॥ के ली गोदानः आथ हा ११२
ना॥ गज दानेः कैसी दाना॥ भुमी दानः आभर
ने॥ देणे की ते कारनी॥ ११३॥ ऐसी जव जाती द
नाव की पतव प॥ करी धी जाती॥ यथा काजी
करोनी अंगो की॥ आरोग्य रसा लेती॥ ११४॥
जे वी ता जाले अविधायक आंचवोनी वेसवे समस्त॥
॥ वी कम चवा प्रा॥ ॥

(१५४) उटी चंदन फी मकी ल॥ गकाधा ली ली सुमन माकी॥
॥ ११४॥ वी डे हे ली हा डे धार॥ दक्षण दिली न्हपव
रा॥ सत्र अक्षर लचि द्यो र आपार॥ करी ते जाते
ब्राह्मणा॥ ११५॥ ली घे वो डची ली मरन क॥ आक्ष
लार की ली ब्रह्मादी का॥ थोर जाले के तुका र्शिं
दी क पाहा तट लो॥ ११६॥ दश रथ कुळी ये क पुत्र॥
रघु नाथ जान की कां ल॥ की गो कुळी आवत
ला करण न॥ थ॥ लेणे वधु आणी ल आपले॥ ११७॥
ते सा पुत्र ये क वणी रो न॥ जेणे पीता आणी ली

सुरसेन॥ पुररायकेलागहना॥ चौलो कवामा
 शारी॥ ११८॥ स्वकजही धली पाटवणी गत्रुस
 ७६ जाले हुलारानी गमगला गुनी वाह्याचो ध्यनी॥
 ११९॥ पावले लेसी १५
 धपुरी॥ प्रधान जाले समोरी॥ नगर रेगारी
 लेनाना परी॥ ध्वजा पताका मीरवती॥ १२०॥
 गुजीया लोरगे गुमारी की॥ नखरे दारि दारि सेवो
 ती॥ नगर लेक लेये वेकी॥ पहाती सुरसेना
 सी॥ १२१॥ जाला धान्यची बोवाळणी॥

१६१ सुरसेन जाला होला दरी पारी रा लया सी करी
 ना ना उपचारा॥ लो बळकट जाला रा लव धोरण
 मग कायवी चार केला॥ १२३॥ जाला चल जाला
 उ१५५ वली सी॥ १२४॥ करी पीलीया पुत्रा सी॥
 राजी स्थापु सुरसेना सी॥ मागुना नीये येने॥
 १२४॥ लेखाची चार केला॥ प्रधान जाला
 द्या वृंतांत रंगांनी तला॥ दळभार पालाणी ला॥

8

95

178

939

मंगनी धाला रो न सीपे ॥ १२५ ॥ पावले म हाव
 री नगर ॥ १२६ ॥ रो न सी सों गती हेरा ॥ स्वामी
 उगले पर चक्र ॥ तया वकी रो न ये ॥ १२६ ॥ तुम
 चानर ही कोणी साव रो ल ॥ पर दुका सी पर म
 वी ला ॥ १२७ ॥ री रुर रो न आ स ल ॥ तरी रिके
 न लागे सया ॥ १२८ ॥ हे ला पुनी यानुन्या ॥ वकी
 से न चालो नी आ लो ग हन ॥ १२९ ॥ लो मे व नी
 नगर जन ॥ १३० ॥ धु धु करा वे सर्व था ॥ १३० ॥ प्रधान
 लो वती साया सी ॥ तु सी स हवे नगर वा सी ग
 आ सी ज ॥ १३१ ॥ संग्र मा सी ॥ राया र मोर ॥ १३१ ॥
 भी लो भी सी राया वे मोर ॥ १३२ ॥ धु नुरा बाण बाण
 र च डु ॥ लो मं र ॥ १३३ ॥ हु ड ॥ हु ड ॥ मा हा वी रा ॥ रास्त्रे ल
 र व ल र वी ती ॥ १३४ ॥ कै ले बाण ज व र जंग स ॥
 जु ल ॥ गुं ड गो फणी ॥ आप मी लि मं के र ली रे वी
 लो रा री टा री ॥ सी ध्य के ले सुं र ग म र ही वं स ॥ म
 जं सी धा त ले गुं ड र ॥ क र नी या र ज जंग र ॥
 प्रधान नगरा बा ही र उवा ल ॥ १३५ ॥ ले जे व वी
 र से न दे र वी ल ॥ १३६ ॥ म जे भ ये नगर सी ध्य ॥ १३७ ॥

दुलबोल। उनीचहीला। करीपत्रीकादीधली॥
॥१३३॥ लेथेआवधेलीहीलेसमुळ। पुस्तीनहा
॥१३४॥ वेचंचळा। स्थिरहो। उनीयासकळा। भयटाका
मानसीचे॥ १३४॥ भेरीध्यावीसुरसेनाची॥ आ
गीमजबकीरोन। बोळकासी॥ कांक्षरसोंडे॥ १३५॥
नीजीकीनी॥ नीभयिरीभेटावे॥ १३५॥ ऐसे
पादवीलेहेर॥ नीहोप्रधानासीकेलानमस्का
रासांगीललेसवीरसारा। सपलीभेरवाराया
सी॥ १३६॥ पत्रीकादीहीली। नासिरकली॥
लेदनीराया। जलवा। तेकोनी। त्याजीबोली॥
वीकमचापादी॥

कायकरीप्रधान॥ १३७॥ लयेबोलावीलाआपुला
दुला। म्हणरायासीकरीमुत॥ सांगआवधावता॥
कायआरुनासपानी॥ १३८॥ प्रधानदुतीआवधे
सांगीलले। रायेसमुळपरीसले। सपलयासी
बोलावावहीले। पत्रीकामनासीआपुन॥ १३९॥
दुलीज। उनीयासवर॥ प्रधानासीसांगीनलेप्रलोतरा॥
सवेहेउनीकाटीकरा। पारवीलेतयासी॥ १४०॥
हरकरीलीराया। जोहरा। पत्रीकाहेउनीकेलावे
सकांरा। उकलेनीवाचीनपवर॥ तीहीलाआव

१९ द्वा र्हाल ॥ १४१ ॥ पनो का जव वा चीला ॥ तव नेत्री
सुट ले अरच पास ॥ जो वी चार धडला होला बीप
सैल ॥ सुरसेन का ले सीप १४२ ॥ राज पुटी लास सर ॥
नी राणी स के ला हाकार ॥ नी द्या लास सर ॥ भेटी करे
जा ॥ १४३ ॥ नगर दारी होते मधान ॥ आवधे येक व
ट हो उन ॥ द काधी पली बोला उन ॥ हने नगर श्री
गार सवे ॥ १४४ ॥ राजानी धा लास मोरा ॥ लाग लावा
जं लरा चागा जरा ॥ तेन नंद अकर ॥ गजे नीले ४५ ॥
येर येरा द्रष्टा द्रष्टा साकी ॥ भद्र रोने उतर ला आस्वा

१९ आळगी लाय कमेका ॥ १४५ ॥ आवधे मी कोनीय कर ॥
प्रवेश ले मद्राव ती नगर ॥ वा जं लरा चा दुम दुम कार ॥ न
दे आने रग जल स ॥ १४६ ॥ यार जं नंद टो कासी ॥ वोवा
कणी देली या ॥ च कासी ॥ धान्य टाकी ती हा ही दीसी ॥
राज पुत्रा वर नीया ॥ १४७ ॥ पुटे चाले बली रोने ॥ म
ध्य भागि सुर रोने ॥ पाटी आस भद्र रोने ॥ जाली थो
कत धो कित ॥ १४८ ॥ ऐसे प्रवेश ले राज मं हीरी ॥ रस
दी पी वोवाळ ती नारी ॥ भद्र रोने कांत कुर वंडी करी ॥
सुरवे वोवाळी चै द्यायी ॥ १४९ ॥ लव जाली भोजन
वेळा ॥ जनावगेणा जाली स्थ पं कीरन कळा ॥ थो
उकरी ती मोहका सुर रोने न्या ॥ १५० ॥ तो ही वर

२०
 लसाक मला ॥ प्रभु ले सुय उद्योजाला ॥ सुर रीना
 सायदा ॥ भीरी क के ला ॥ भद्र रीने उनाला ॥ जान दे करनी
 भा ॥ या ॥ १६६ ॥ राज्य अ ॥ वधे वध कर के ले ॥ उनाणी के रा ॥
 जे हा ले धे ले लो ले आव दो सो उची ले ॥ उना रना मागे
 नी नीगे वकी रीने ॥ १६७ ॥ उना ला अ ॥ पुल्या नगरा सी ॥
 राज्य कमी प्रतापेसी ॥ नैव हा करानी परी ये सी गन ॥
 दे पुत्र क लत्री ॥ १६८ ॥ उद की क थारा वासा गे पसी
 जा प्रली ॥ उने नी वे से मा गुली ॥ नी चो चा चो नी पे ॥ १६९ ॥
 थोर वी सम या राजा क सी ॥ नजे रा धो न क थार संगी लली
 बरी ॥ रात्री कर्म ली दुधरी ॥ नी द्रान ये ची उना ई क ला ॥ १७०
 य क प्रहर कर्म ली रात्री ॥ दुसरा प्रहर जाला प्राप्ती ॥ सा
 री री जाली सांग ली ॥ न के थारा सांगे र हा री दा री ॥ १७१ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com